जे कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन का अध्ययन

विवेक कुमार गुप्ता, डॉ. आर.के.एस. अरोड़ा

शोध छात्र, शिक्षा शास्त्र, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर

शोध निर्देशक, शिक्षा शास्त्र, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर

Studying the Education Philosophy of J. Krishnamurthy

Vivek Kumar Gupta, Dr. R.K.S. Arora
Research Scholar, Education Deptt., Bhagwant University, Ajmer
Prof., Education Deptt., Bhagwant University, Ajmer

सारांशः

शिक्षा का क्षेत्र हमेशा सभी दार्शनिकों के लिए एक दिलचस्प क्षेत्र रहा है क्योंकि यह उन्हें अपने विचारों या दृष्टि को एक ठोस आकार देने का साधन प्रदान करता है और कृष्णमूर्ति कोई अपवाद नहीं हैं। जे कृष्णमूर्ति शिक्षा के बारे में गहराई से चिंतित हैं और एक एकीकृत व्यक्ति को लाने की परिकल्पना करते हैं जो शारीरिक रूप से फिट, निडर, मूल्यों के प्रति सच्चे, पूछताछ की भावना, बुद्धिमान, रचनात्मक, अच्छे सौंदर्य बोध, सही व्यवसाय का चयन करता है, और इस प्रकार व्यक्तित्व की पूर्णता प्राप्त करता है। और एक नई सामाजिक व्यवस्था का विकास करता है। इस तरह के एक एकीकृत और समग्र व्यक्तित्व के निर्माण के लिए, कृष्णमूर्ति ने एकीकृत पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र, एकीकृत शिक्षकों, छोटे आकार के स्कूलों, अनुभव–आधारित शिक्षा, प्रकृति के प्रति सम्मान और एक संवेदनशील, निडर और उत्तेजक सीखने के माहौल को बनाए रखने की वकालत की, प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने के लिए गैर–वकालत की और गुणात्मक या रचनात्मक संस्कृति। मूल्यांकन। नवीनतम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उनकी दृष्टि या शैक्षिक विचार या शिक्षा के दर्शन का प्रतिबिंब 21वीं सदी में उनके दर्शन की प्रासंगिकता को सिद्ध करता है।

कीवर्डः जे कृष्णमूर्ति, शिक्षा का दर्शन, सही शिक्षा

परिचय

शिक्षा आदि काल से ही सभी दार्शनिकों के लिए सदैव मंथन का विषय रही है। अन्य सभी दार्शनिकों की तरह, एक प्रसिद्ध दार्शनिक और विश्व शिक्षक जे कृष्णमूर्ति का भी शिक्षा के प्रति गहरा सरोकार है। इसके अलावा उन्होंने रोजमर्रा की जिंदगी से जुड़ी कई और आम बातों पर भी बात की। उन्होंने आधुनिक समाज में हिंसा और भ्रष्टाचार के साथ जीने की समस्याओं के बारे में, सुरक्षा और खुशी के लिए व्यक्ति की खोज के बारे में और मानव जाति को भय, क्रोध, चोट और दुःख के आंतरिक बोझ से मुक्त करने की आवश्यकता के बारे में बात की। विवाह, सम्बन्ध, साधना, शान्ति आदि के विषय में उसकी प्राथमिक चिन्ता शिक्षा की है, जिसे वह ठीक नहीं मानता। कृष्णमूर्ति प्रचलित सड़ी–गली शिक्षा प्रणाली के पूर्णतया विरुद्ध थे और उनका मानना है कि यदि एक ही प्रकार की शिक्षा को बढ़ावा दिया जाएगा तो यह एक रोगग्रस्त, विभाजित मनुष्य को उत्पन्न करेगी, अर्थात् लोभी, ईर्ष्यालु, स्वार्थी, धूर्त मन वाला मनुष्य जो संसार को नष्ट कर देगा।

कृष्णमूर्ति के लिए, वर्तमान शिक्षा प्रणाली, अंक और डिग्री तक ही सीमित है, छात्रों में डर पैदा करती है और उन्हें निर्धारित पैटर्न में समायोजित करने के लिए मजबूर करती है। सेट पैटर्न को कैद करके, यह बच्चे को नवीन, रचनात्मक और गंभीर रूप से सोचने से रोकता है। गुलाम बना रही है वर्तमान शिक्षा व्यवस्था; मानसिक रूप से गुलाम बनाए गए लोग जो अपने तरीके से नहीं सोचते; जो निरीक्षण और पूछताछ नहीं करते हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली बच्चे के जन्मजात गुणों यानी अवलोकन, भिन्न विचार प्रक्रिया, विचार और कल्पना की मुक्त अभिव्यक्ति को नष्ट करके एक दुखी और खंडित व्यक्ति का निर्माण कर रही है। यह विखंडन युवाओं के बीच गलत मूल्यों – धन, शक्ति, प्रतिष्ठा आदि को पनपने और बढ़ावा देने के लिए जगह प्रदान करता है। शिक्षा न केवल आर्थिक लाभ का साधन है बल्कि समझ, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और क्षमता की खेती के माध्यम से सशक्तिकरण, खुशी, स्वतंत्रता और निर्भयता को भी सक्षम बनाती है। . गंभीर रूप से सोचने के लिए, समस्याओं को रचनात्मक रूप से हल करने के लिए और सही निर्णय लेने के लिए जो व्यक्तित्व की संपूर्णता की ओर ले जाता है। नवीनतम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कृष्णमूर्ति के दर्शन के कुछ प्रतिबिंब हैं क्योंकि नीति बच्चों में इन सभी कौशलों को विकसित करने और उन्हें समग्र रूप से विकसित करने पर भी जोर देती है। इससे सिद्ध होता है कि उनका शिक्षा का दर्शन 21वीं सदी में भी प्रासंगिक है। अतः इस शोध पत्र में शोधकर्ता ने अपने शिक्षा दर्शन का विश्लेषण करने का प्रयास किया है।

शोध प्रश्न

1. जे कृष्णमूर्ति का शिक्षा दर्शन क्या है?

2. क्या उनका शिक्षा का दर्शन अभी भी प्रासंगिक है?

उद्देश्य

1. जे.जे. कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन का विश्लेषण।

2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में जे कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन के प्रतिबिंबों का पता लगाने के लिए।

अनुसंधान पद्धति

इस पत्र में, शोधकर्ता ने उपरोक्त दोनों उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामग्री विश्लेषण का उपयोग किया है। सामग्री विश्लेषण के स्रोत प्राथमिक और द्वितीयक दोनों स्रोत हैं जिनमें कृष्णमूर्ति की पुस्तकें, उनकी आधिकारिक वेबसाइटें, कृष्णमूर्ति फाउंडेशन द्वारा प्रदान किए गए उनके आधिकारिक ऑडियो और वीडियो, पत्रिकाएं आदि शामिल हैं।

कृष्णमूर्ति का शिक्षा दर्शन

विचार या विचार को व्यवहार में लाने के लिए शिक्षा एक प्रमुख साधन है। इसलिए, लगभग सभी दार्शनिकों ने, चाहे वह रवींद्रनाथ टैगोर हों या गांधी या डेवी या इवान इलिच या मारिया मॉन्टेसरी, अपने दर्शन को जीवंत करने के लिए इस पद्धति को अपनाया है और कृष्णमूर्ति कोई अपवाद नहीं थे। कृष्णमूर्ति ने अपने प्रयोग द्वारा अपने विचार को मूर्त रूप दिया है।

जैसा कि कृष्णमूर्ति प्रचलित शिक्षा प्रणाली को दोषपूर्ण या सही नहीं मानते हैं, उनके शैक्षिक दर्शन को 'सही शिक्षा' या 'सही प्रकार की शिक्षा' के रूप में जाना जाता है। कृष्णमूर्ति सही वातावरण, शिक्षा के सही कार्यों, सही पाठ्यक्रम, शिक्षण की सही पद्धति, सही शिक्षक और सही स्कूल की चर्चा करते हैं जो सामूहिक रूप से कृष्णमूर्ति की सही शिक्षा का निर्माण करते हैं। वे अपनी कई पुस्तकों में अपने शैक्षिक विचारों को प्रतिबिम्बित करते हैं, जिनमें 'एजुकेशन एंड सिग्निफिकेंस ऑफ लाइफ', 'ऑन एजुकेशन', 'लाइफ अहेड' और लेटर्स टू द स्कूल (वॉल्यूम.1 और वॉल्यूम.2) प्रमुख हैं।

जे कृष्णमूर्ति के शैक्षिक दर्शन में, शोधकर्ता ने शिक्षा के अर्थ, शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षा के पाठ्यक्रम, शिक्षण के तरीके, अनुशासन, शिक्षक छात्र या बच्चे और स्कूल के प्रति उनके दृष्टिकोण के बारे में चर्चा की है।

कृष्णमूर्ति की शिक्षा की अवधारणा

कृष्णमूर्ति ने समकालीन शिक्षा प्रणाली और दिन–ब–दिन फलते–फूलते उसके कुकृत्यों के प्रति गहरा असंतोष प्रकट किया है। उन्होंने उस शिक्षा प्रणाली का कड़ा विरोध किया जिसमें बच्चों को केवल उनके अंकों और डिग्री से आंका जाता है; उन्हें उनके पद या पेशे यानी डॉक्टर या इंजीनियर द्वारा सम्मानित किया गया है; उन्हें केवल आजीविका कमाने की तकनीकों में प्रशिक्षित किया गया है, जो कि सच्ची शिक्षा नहीं है।

कृष्णमूर्ति के अनुसार, शिक्षा केवल "एक तकनीक, एक कौशल प्राप्त करना नहीं है, बल्कि एक इंसान को महान कला के साथ जीने के लिए शिक्षित करना है। इसका मतलब केवल तकनीकी ज्ञान नहीं है...बल्कि मानस का विशाल असीम क्षेत्र भी है"। , इससे आगे बढ़कर, यह समग्र शिक्षा है३" (कृष्णमूर्ति, 1984) वे आगे कहते हैं, "शिक्षा का अर्थ है मन को तकनीकी रूप से विकसित करना, जीवन के लिए एक समग्र दृष्टिकोण ३ और मस्तिष्क अपने क्षुद्र क्षुद्र स्व में। से मुक्त होने के लिए भी विकसित होना" (कृष्णमूर्ति, 1984)। यहाँ 'क्षुद्र आत्म' घृणा, ईर्ष्या, क्रोध, भय, अज्ञानता, संकीर्णता से भरे मन को इंगित करता है और ऐसा क्षुद्र मन निरपेक्षता को नहीं समझ सकता है। इसलिए, यह स्पष्ट, आलोचनात्मक, अभिनव और एकीकृत दृष्टिकोण प्राप्त करने के लिए सभी रूढ़िवादिता, मनोवैज्ञानिक बाधाओं, मजबूरियों, भय, संघर्षों और निर्धारित पैटर्न से खुद को मुक्त करना आवश्यक है। और जो शिक्षा इस तरह के सही दृष्टिकोण को बढ़ावा देती है वह सही प्रकार की शिक्षा है। सही प्रकार की शिक्षा की वकालत करते हुए, उन्होंने समझाया कि "सही प्रकार की शिक्षा का अर्थ है बुद्धि का जागरण, एक एकीकृत जीवन को बढ़ावा देना, और केवल ऐसी शिक्षा ही एक नई संस्कृति और एक शांतिपूर्ण विश्व का निर्माण कर सकती है" (कृष्णमूर्ति.2014.च) .52) और "सही शिक्षा लाने के लिए, हमें समग्र रूप से जीवन के अर्थ को स्पष्ट रूप से समझना चाहिए, और इसके लिए हमें सोचने में सक्षम होना चाहिए, लगातार नहीं, बल्कि सीधे और सही मायने में" (कृष्णमूर्ति, 2014. पृष्ठ 14)) शिक्षा, सही अर्थों में, स्वयं की समझ है, क्योंकि यह हम में से प्रत्येक के भीतर है कि संपूर्ण अस्तित्व एकत्रित है (कृष्णमूर्ति, 2014)।

शिक्षा का उद्देश्य

कृष्णमूर्ति के अधिकांश शैक्षिक लेखन एक मूलभूत प्रश्न से संबंधित हैं: शिक्षा के उद्देश्य क्या हैं? इन लेखों से हम कृष्णमूर्ति के समग्र आशय को समझ सकते हैं। कृष्णमूर्ति का कथन न केवल शैक्षिक उद्देश्यों का एक

सामान्य कथन था, बल्कि विशेष रूप से कृष्णमूर्ति विद्यालयों के उद्देश्य की व्याख्या भी था। यहाँ शोधकर्ता ने अपने शैक्षिक उद्देश्यों या सही शिक्षा के उद्देश्यों पर विस्तार से चर्चा की है।

पाठ्यचर्या

कृष्णमूर्ति ने बच्चे के पूर्ण या समग्र विकास को सुनिश्चित करने के लिए एक एकीकृत पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया है। वे पर्यावरण के प्रति बहुत चिंतित थे, इसलिए उन्होंने अन्य विषयों के साथ–साथ पर्यावरण के अध्ययन की भी वकालत की। उनके शिक्षण संस्थान में 'पर्यावरण अध्ययन' एक अलग विषय के रूप में अपना अस्तित्व रखता है। उन्होंने अन्य विषयों के अलावा कला और शिल्प, नृत्य और संगीत, नाटक और वाद–विवाद, तैराकी, खेल, एथलेटिक्स, बागवानी, योग आदि जैसी विभिन्न गतिविधियों की भी सिफारिश की।

शिक्षण के तरीके

कृष्णमूर्ति ने किसी विशिष्ट विधि का सुझाव नहीं दिया, बल्कि उन्होंने आवश्यकता के अनुसार अपनी विधि बनाने के लिए इसे शिक्षकों पर छोड़ दिया क्योंकि उनका मानना था कि शिक्षण एक तकनीक नहीं है; यह जीवन का तरीका है। उन्होंने कहा, "किसी भी तरीके का पालन करने की कोई आवश्यकता नहीं है" (कृष्णमूर्ति.2014.पृ.115)। उनके दृष्टिकोण के आधार पर कुछ सिद्धांत (कृष्णमूर्ति के विचारों के प्रतिबिंब के साथ) शोधकर्ता द्वारा सूचीबद्ध किए गए हैं जिन्हें पढ़ाते समय ध्यान में रखा जाना चाहिए–

- जर्नल ऑफ़ रिसर्च इन ऑल सब्जेक्ट्स में फ़ियरलेसनेस का सिद्धांत
- स्वतंत्रता का सिद्धांत
- आत्म–ज्ञान का सिद्धांत
- एकीकरण/पूर्णता का सिद्धांत
- सहयोग का सिद्धांत
- गंभीर सोच का सिद्धांत

अनुशासन

कृष्णमूर्ति अनुशासन शब्द का प्रयोग करने से बचते हैं क्योंकि यह अनुरूपता, अनुकरण, आज्ञाकारिता आदि के सभी प्रकार के अर्थों से भरा हुआ है। वे अक्सर अनुशासन के बजाय आदेश का उपयोग करते थे। उनके अनुसार, "अनुशासन का अर्थ है सीखना, न अनुरूप होना, न दमन करना, प्रतिरूपों की नकल न करना... इसमें कई चीजें शामिल हैंः सीखना, तपस्या करना, मुक्त होना, संवेदनशील होना और चीजों को प्रेम की सुंदरता से देखना। " अनुशासन स्वतंत्रता है " (कृष्णमूर्ति, 1970)। स्वतंत्रता का मतलब यह नहीं है कि कोई व्यक्ति जो कुछ भी करना चाहता है वह कर सकता है। लेकिन यह एक आदेश है और उस आदेश को लाने के लिए व्यक्ति को "असाधारण रूप से ग्रहणशील, हर चीज के प्रति संवेदनशील" होना चाहिए। आप समय के पाबंद होंगे। , आप नियमित रूप से कक्षा में आएंगे, आप अध्ययन करेंगे, आप इतने जीवंत होंगे कि आप चीजों को सही करना चाहेंगे" (कृष्णमूर्ति, 2012. पृ.31)। इसलिए, कृष्णमूर्ति आत्म–अनुशासन की वकालत करते हैं।

शिक्षक

कृष्णमूर्ति का विचार है कि हमें एक एकीकृत शिक्षक की आवश्यकता है क्योंकि ऐसा शिक्षक ही एकीकृत व्यक्तियों का विकास कर सकता है। एक शिक्षक की भूमिका को परिभाषित करते हुए, वे कहते हैं, "एक शिक्षक केवल एक सूचना देने वाला नहीं है; वही ज्ञान का, सत्य का मार्ग दिखाता है" (कृष्णमूर्ति.2014.पृ. 98)। वह आगे कहता है, "उसे अपने सभी विचार, अपनी सारी देखभाल और स्नेह सही वातावरण के निर्माण और समझ के विकास के लिए देना चाहिए, ताकि जब बच्चा परिपक्व हो जाए, तो वह मानवीय समस्याओं से बुद्धिमानी से निपटने में सक्षम हो जाए जो कि उठना।" उसे। लेकिन ऐसा करने के लिए, शिक्षक को विचारधाराओं, प्रणालियों और विश्वासों पर भरोसा करने के बजाय खुद को समझना चाहिए" (कृष्णमूर्ति.2014. पृ.25)। ऐसा वातावरण प्रदान करने के लिए, उसे बच्चे की स्वतंत्रता से संबंधित होना चाहिए। वह आंतरिक रूप से समृद्ध होना चाहिए, महत्वाकांक्षी नहीं होना चाहिए और किसी भी रूप में किसी भी शक्ति की तलाश नहीं करनी चाहिए, पद या अधिकार प्राप्त करने के साधन के रूप में शिक्षण का उपयोग नहीं करना चाहिए, समाज और सरकार के नियंत्रण की बाध्यताओं से मुक्त होना चाहिए और किसी एक पर निर्भर नहीं होना चाहिए पढ़ाने का तरीका। वे कहते हैं, "जो अनुभव कर रहे हैं, और इसलिए सिखा रहे हैं, वे ही वास्तविक शिक्षक हैं, और वे भी अपनी तकनीकों का निर्माण करेंगे" (कृष्णमूर्ति। 2014. पृष्ठ 48)।

इसलिए, कृष्णमूर्ति के लिए, सही शिक्षक वह है जो एक निडर, तनाव–मुक्त, प्रतिस्पर्धी और मुक्त वातावरण बनाता है ताकि बच्चे का समग्र विकास हो सके। वह छात्रों के लिए एक सूत्रधार और मित्र के रूप में कार्य करता है।

विद्यार्थी / बालक

कृष्णमूर्ति के अनुसार विद्यार्थी और शिक्षक दोनों एक साथ सीखते हैं। इसलिए विद्यार्थी को बराबर का भागीदार मानना चाहिए। उन्हें अपना अनूठा अस्तित्व विकसित करने के अवसर दिए जाने चाहिए। उन पर चीजें थोपी नहीं जानी चाहिए बल्कि उन्हें खुद को खोजने और अपनी क्षमता को पूरा करने के लिए स्वतंत्र होना चाहिए। यह अकेले विद्यार्थी या अकेले शिक्षक द्वारा नहीं किया जा सकता है बल्कि दोनों को मिलकर करना चाहिए।

स्कूल

"स्कूल एक ऐसी जगह है जहाँ व्यक्ति जीवन की समग्रता, समग्रता के बारे में सीखता है। अकादमिक उत्कृष्टता नितांत आवश्यक है, लेकिन एक स्कूल में इससे कहीं अधिक शामिल होता है। ज्ञान की दुनिया का अन्वेषण करें, लेकिन हमारी सोच, हमारा अभ्यास भी" (कृष्णमूर्ति, 2007। परिचय)। कृष्णमूर्ति बड़े शिक्षण संस्थानों के खिलाफ थे जो शिक्षक–छात्र अनुपात से परेशान नहीं होते हैं और केवल अपना व्यवसाय चलाते हैं जितना संभव हो उतने छात्रों को नामांकित करते हैं। कृष्णमूर्ति छोटे आकार के स्कूलों, यानी छात्रों की सीमित संख्या और सही तरह के शिक्षकों के पक्ष में थे। वह जोर देकर कहते हैं, "एक बड़ी और फलती–फूलती संस्था जिसमें सैकड़ों बच्चे एक साथ शिक्षित होते हैं ३ बैंक क्लर्क और सुपर–सेल्समैन, उद्योगपति या कमिश्नर, सतही लोग जो तकनीकी रूप से कुशल हैं; लेकिन केवल एकीकृत व्यक्ति में ही उम्मीद है, जिसे लाने में केवल छोटे स्कूल ही मदद कर सकते हैं" (कृष्णमूर्ति.2014.पृष्ठ 86)।

कृष्णमूर्ति के आठ स्कूल दुनिया भर में स्थापित किए गए हैं और अभी भी फल–फूल रहे हैं। ओक ग्रोव स्कूल और ब्रॉकवुड पार्क स्कूल विदेश में हैं जबकि ऋषि वैली स्कूल, राजघाट बेसेंट स्कूल, द वैली स्कूल,

द स्कूल केएफआई, सह्याद्री स्कूल और पाठशाला भारत में हैं। इन स्कूलों का उद्देश्य और मिशन "बच्चे को सबसे उत्कृष्ट तकनीकी दक्षता से लैस करना है ताकि वह आधुनिक दुनिया में स्पष्टता और दक्षता के साथ कार्य कर सके, और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि सही वातावरण बनाना ताकि बच्चा पूरी तरह से विकसित हो सके।" "। एक संपूर्ण इंसान। इसका अर्थ है उसे अच्छाई में खिलने का अवसर देना ताकि वह सही ढंग से लोगों, चीजों और विचारों से पूरे जीवन से संबंधित हो सके" (कृष्णमूर्ति, 2012. पृष्ठ 73)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन के प्रतिबिंब

शोधकर्ता ने नवीनतम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में जे कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन के प्रतिबिंबों को खींचने का प्रयास किया है जो इस प्रकार हैः

- कृष्णमूर्ति अनुभवात्मक अधिगम पर जोर देते हैं क्योंकि व्यावहारिक सत्र बच्चों को गंभीर रूप से सोचने, रचनात्मक रूप से सोचने, पूछताछ करने, खोजने, चर्चा करने, बातचीत करने और समस्या का विश्लेषण करने के लिए प्रेरित करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस संबंध में कृष्णमूर्ति के दृष्टिकोण को दर्शाती है – "शिक्षण और सीखने को अधिक संवादात्मक तरीके से संचालित किया जाएगा; प्रश्नों को प्रोत्साहित किया जाएगा, और छात्रों के लिए गहन और अधिक अनुभवात्मक सीखने के लिए कक्षा सत्र नियमित रूप से आयोजित किए जाएंगे।" अधिक मज़ेदार, रचनात्मक, सहयोगी और खोजपूर्ण गतिविधियाँ "(राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)।
- कृष्णमूर्ति ने पाठ्यक्रम को एकीकृत करने पर जोर दिया और अब नवीनतम शिक्षा नीति भी एक एकीकृत या क्रॉस–करिकुलर शैक्षिक दृष्टिकोण की बात करती है।
- कृष्णमूर्ति प्रकृति को बहुत महत्व देते हैं, जिसका हम सभी हिस्सा हैं। उन्होंने प्रकृति, पक्षियों, जानवरों, सरीसृपों, कीड़ों आदि के संरक्षण और प्रकृति के प्रति संवेदनशील और सम्मानपूर्ण होने के लिए प्रकृति के साथ समय बिताने की वकालत की। अब नीति निर्माताओं ने भी इसके महत्व को महसूस किया और "ऑर्गेनिक लिविंग" (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020) और "पर्यावरण शिक्षा" (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020) को पाठ्यक्रम में शामिल करने और "पर्यावरण के लिए सम्मान" विकसित करने का सुझाव भी दिया। शिक्षा नीति 2020) सभी छात्रों में।
- कृष्णमूर्ति एक निडर और उत्तेजक सीखने के माहौल के प्रबल पक्षधर थे। ऐसा वातावरण छात्रों को विभिन्न जीवन कौशल और सामाजिक कौशल विकसित करने के लिए उचित गति प्रदान करता है। महत्वपूर्ण सोच, संचार, सहयोग, रचनात्मकता, आत्म–पहल, आत्म–अनुशासन, टीम वर्क, जिम्मेदारी, नागरिकता, आदि और इसलिए उन्हें समग्र रूप से फलने–फूलने दें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी शिक्षण संस्थानों में सीखने के लिए "सुरक्षित और उत्तेजक सीखने के माहौल" को आवश्यक मानती है।
- कृष्णमूर्ति स्कूलों में गैर–प्रतिस्पर्धी माहौल बनाए रखने के प्रबल पक्षधर थे क्योंकि हर बच्चा अद्वितीय होता है और उसकी विशिष्टता को पहचाना और बढ़ावा दिया जाना चाहिए। प्रतियोगिता इसकी विशिष्टता को नष्ट कर देगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक गैर–प्रतिस्पर्धी संस्कृति को विकसित करने की दिशा में आगे बढ़ रही है, जब उसने सिफारिश की – "प्रत्येक छात्र की अद्वितीय क्षमताओं को पहचानना, पहचानना और बढ़ावा देना, ... प्रत्येक छात्र के समग्र विकास को बढ़ावा देना"...
- अंतिम लेकिन कम नहीं, कृष्णमूर्ति मात्रात्मक मूल्यांकन प्रणाली के खिलाफ थे, जो बच्चों को केवल रटने के आधार पर आंकता है। उन्होंने गुणात्मक मूल्यांकन प्रणाली का समर्थन किया क्योंकि यह दैनिक

आधार पर किया जाता है और इसमें मात्रात्मक और गैर–मात्रात्मक दोनों पैरामीटर शामिल होते हैं। यह देखना अच्छा है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में "... योगात्मक... जो अधिक नियमित और रचनात्मक है... और विश्लेषण, महत्वपूर्ण सोच और वैचारिक स्पष्टता जैसे उच्च स्तर के कौशल का परीक्षण करता है" से बदलाव की सिफारिश की गई है।

निष्कर्ष

शिक्षा के उनके दर्शन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इसके प्रतिबिंबों से यह स्पष्ट है कि उनकी दृष्टि अभी भी जीवित है और नीति निर्माताओं को दिशा प्रदान कर रही है। कृष्णमूर्ति की तरह, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य महत्वपूर्ण और रचनात्मक सोच, संवेदनशीलता, करुणा, सहानुभूति, साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक स्वभाव, सच्चे मूल्यों और अन्य उच्च–स्तरीय कौशल वाले समग्र और एकीकृत व्यक्तियों को विकसित करना है। कृष्णमूर्ति की तरह एक समग्र व्यक्तिगत राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लाने के लिए, एक एकीकृत पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र, एक समग्र दृष्टिकोण वाले शिक्षक, माता–पिता की भागीदारी और निडर स्कूल का माहौल आवश्यक है। राष्ट्रीय नीति 2020 में कृष्णमूर्ति के विचारों का प्रतिबिंब परिवर्तन की शुरुआत का संकेत देता है। ऐसी शिक्षा प्रणाली बहुत प्रगतिशील लगती है और बच्चों को अच्छाई और खुशी और जीवन की पूर्णता में खिलने के लिए बहुत जगह प्रदान करती है।

संदर्भ

1. हंटर, ए। (1988)। सत्य के बीजः जे कृष्णमूर्ति धार्मिक शिक्षक और शिक्षक (डॉक्टरेट शोध प्रबंध) के रूप में। लीड्स विश्वविद्यालय, यूनाइटेड किंगडम। http://etheses.whiterose.ac.uk/409/1/uk_bl_ethos_234816.pdf से लिया गया
2. कृष्णमूर्ति (2004)। फ्रीडम का मतलब क्या होता है?... चेन्नईः कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया।

3- कृष्णमूर्ति आधिकारिक वेबसाइट। अध्याय 43 – आकाश, पृथ्वी, मानव अस्तित्व की गति अविभाज्य है। जीवन का संपूर्ण आंदोलन सीखना है। 30/06/2020 from https://jkrishnamurti.org/content/chapter-43-movement-skies-earth-human-existence-indivisible/education%20must%20not%20only%20be%20efficient%20in%20academic%20disciplines%20but%20must%20also%20explore%20the%20conditioning%20of%20human%20conduct at 6:00 pm. से लिया गया ।

4- कृष्णमूर्ति, जे. (1984)। दूसरी प्रश्न और उत्तर बैठक। सार्वजनिक प्रश्न और उत्तर 2 सानेन, स्विट्जरलैंड –24 जुलाई 1984। 19/05/2019 from https://jkrishnamurti.org/content/2nd-question-answer-meeting-41 at 2:41 pm. बजे लिया गया।

5. कृष्णमूर्ति, जे. (2007). प्राक्कथन। रिश्तेः खुद के लिए, दूसरों के लिए, दुनिया के लिए। कैलिफोर्नियाः अमेरिका के कृष्णमूर्ति फाउंडेशन।
6. कृष्णमूर्ति, जे. (2007). जीवन आगे। चेन्नईः कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया।
7. (2012)। शिक्षा पर। चेन्नईः कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया।
8. (2014)। शिक्षा और जीवन का महत्व। चेन्नईः कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया।

9. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एमएचआरडी), भारत सरकार। 13/08/2020 को शाम 4:00 बजे https:@@www-mhrd-gov-in@sites@upload&files@mhrd@files@NEP&Final&English&0-pdf से लिया गया।
10. कृष्णमूर्ति आधिकारिक वेबसाइट। 30/05/2019 को https:@@jkrishnamurti-org@timeline&page से प्रातः 6:00 बजे पुनः प्राप्त किया गया।
11. कृष्णमूर्ति आधिकारिक वेबसाइट। 30/05/2019 को https:@@www-kfionline-org@online&store@commentaries&on&living&1@ से सुबह 4:00 बजे लिया गया।
12. कृष्णमूर्ति (1970)। परिवर्तन की तात्कालिकता। http:@@www-jiddu&krishnamurti-net@en@the&urgency&of&change@1970&00&00&jiddu&krishnamurti&the&urgency&of&change&discipline से 10/03/2018 को लिया गया शाम के 4:30।